डॉ. भारिल्ल विद्यावारिधि उपाधि से सम्मानित

जयपुर : यहाँ रविवार, दिनांक 7 अगस्त को शिक्षण-शिविर के मध्य सम्पूर्ण जैन समाज की एकमात्र प्रतिनिधि संस्था भारत जैन महामण्डल की ओर से जैन समाज के लब्धप्रतिष्ठ विद्वान तत्त्ववेत्ता **डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल** को भव्य समारोह में **विद्यावारिधि** उपाधि से सम्मानित किया गया। समारोह की अध्यक्षता भारत जैन महामण्डल की राजस्थान इकाई के अध्यक्ष श्री सम्पतकुमारजी गदइया ने की।

समारोह के मुख्य अतिथि राजस्थान सरकार के **शिक्षा मंत्री** श्री घनश्यामजी तिवाड़ी थे। आपने डॉ. भारिल्ल के साहित्य की प्रशंसा और टोडरमल स्मारक ट्रस्ट से अपने आत्मीय संबंधों की चर्चा करते हुए कहा कि ह्न डॉ. भारिल्ल बहुत बड़े विद्वान हैं। उनकी धर्म के दशलक्षण जैसी अनेक चर्चित पुस्तकें हैं। यहाँ भारिल्लजी को **विद्यावारिधि** की उपाधि से सम्मानित किया गया है। यह वास्तव में उनका नहीं, बल्कि उनके ज्ञान का सम्मान है। इस सम्मान से समाज को प्रेरणा मिलेगी और उनके पथप्रदर्शन से समाज आगे बढ़ेगी। श्रमण संस्कृति की चर्चा करते हुए आपने कहा कि श्रमण और वैदिक संस्कृति की धारा अविरल गति से अनादिकाल से एक साथ बहती आ रही है। उसी धारा को डॉ. भारिल्ल ने आगे बढ़ाते हुए साहित्य सृजन का कार्य किया है; अत: वे श्रद्धा के पात्र हैं।

मैं भारत सरकार से इनके नाम को **पद्मश्री** के लिए रिकमंड अवश्य करना चाहूँगा।

डॉ. भारिल्ल ने **विद्यावारिधि** की उपाधि ग्रहण करते हुए कहा कि भारत जैन महामण्डल ने वास्तव में मेरा नहीं, अपितु तत्त्वज्ञान की धारा का सम्मान किया है। यदि यह समाज तत्त्वज्ञान का सहारा लेकर चले तो भेद-भाव की रेखाएँ मिट सकती हैं।

इस अवसर पर समाज की अनेक संस्थाओं द्वारा आपको सम्मान पत्र व प्रशस्तियाँ प्रदान कर सम्मानित किया गया।

समारोह के विशिष्ट अतिथि श्री मोहनदासजी अग्रवाल एवं वैद्य श्री केदारनाथजी शर्मा का स्वागत श्री टोडरमल स्मारक के चिकित्सक डॉ. पीयूष त्रिवेदी ने किया।

तीर्थक्षेत्र कमेटी के अध्यक्ष श्री एन.के. सेठी, महासमिति के अध्यक्ष श्री विवेक काला, श्वेताम्बर समाज के नेता श्री एन.एम. रांका, श्री राजकुमारजी काला तथा श्री कुन्दकुन्द कहान तीर्थ. ट्रस्ट के महामंत्री श्री बसन्तभाई दोशी, उपाध्यक्ष ब्र. धन्यकुमारजी बेलोकर एवं श्री सुमनभाई दोशी आदि भी कार्यक्रम की शोभा बढ़ा रहे थे।

इसी समारोह में श्री सम्पतजी गदइया को समाजरत्न व स्व. सुन्दरकुमारी गदइया को समाज गौरव की उपाधि से सम्मानित किया गया। **ह्न अखिल बंसल**

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का, घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 23 266 अंक : 2

प्रवचनसार पद्यानुवाद

ज्ञेयतत्त्वप्रज्ञापन महाधिकार

ज्ञान-ज्ञेयविभाग अधिकार

अस्तित्व निश्चित अर्थ की अन्य अर्थ के संयोग से।
जो अर्थ वह पर्याय जो संस्थान आदिक भेदमय।।१५२।।
तिर्यंच मानव देव नारक नाम नामक कर्म के।
उदय से पर्याय होवें अन्य-अन्य प्रकार कीं।।१५३।।
त्रिधा निज अस्तित्व को जाने जो द्रव्यस्वभाव से।
वह हो न मोहित जान लो अन-अन्य द्रव्यों में कभी।।१५४।।
आतमा उपयोगमय उपयोग दर्शन-ज्ञान हैं।
अर शुभ-अशुभ के भेद भी तो कहे हैं उपयोग के।।१५५।।
उपयोग हो शुभ पुण्यसंचय अशुभ हो तो पाप का।
शुभ-अशुभ दोनों ही न हो तो कर्म का बंधन न हो।।१५६।।
श्रद्धान सिध-अणगार का अर जानना जिनदेव को।
जीवकरुणा पालना बस यही है उपयोग शुभ।।१५७।।
अशुभ है उपयोग वह जो रहे नित उन्मार्ग में।
श्रवण-चिंतन-संगति विपरीत विषय-कषाय में।।१५८।।

ह्न डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

फिर डर कैसा ?

पूज्यपाद आचार्य श्री देवनन्दि के प्रसिद्ध ग्रन्थ इष्टोपदेश के 29 वें श्लोक पर हुए आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरसगर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है। मूल श्लोक इसप्रकार है ह्न

न मे मृत्यु: कुतो भितिर्न मे व्याधि: कुतो व्यथा।
नाहं बालो न वृद्धोऽहं न युवैतानि पुद्गले ।।29।।

मेरा मरण नहीं, तो डर किसका ? मुझे व्याधि नहीं, तो पीड़ा कैसी ? मैं बालक नहीं, मैं वृद्ध नहीं, मैं युवक नहीं। ये (सर्व अवस्थायें) पुद्गल की हैं।

(गतांक से आगे...)

पाँच इन्द्रिय, आयुष्य, श्वासोच्छ्वास, बल, शरीर ये सब जड़ प्राण हैं, ये जीव के अर्थात् मेरे प्राण नहीं है। जीव तो ज्ञान, आनन्द, शांति, सत्ता आदि अनन्त प्राणरूप हैं। मैं तो अनादि-अनन्त जीवत्वशक्ति से जीनेवाला जीवत्वशक्तिसम्पन्न भगवान आत्मा हूँ। मेरे चैतन्यप्राण का कभी नाश नहीं होता; अत: जड़प्राणों के नाश से मेरा नाश कैसे हो सकता है ?

ज्ञानी जीव कहता है कि जड़ प्राणों के त्यागने से मेरा कभी मरण नहीं होता। मेरे चित्शक्तिस्वरूप भावप्राणों का कभी विच्छेद नहीं होता। मैं तो ज्ञान-दर्शनादि अनन्त शक्तिसम्पन्न हूँ। उसका मुझसे कभी भी विच्छेद नहीं होता हैं; क्योंकि जब मेरा मरण ही नहीं है, तो मुझे भय किसका ? दुनिया को मरण का भय लगता है, किन्तु ज्ञानियों के लिये तो यह आनन्द की लहर है। मरण के पूर्व ही जिसने देह और आत्मा की भिन्नता जान ली है, उसे मरणभय कैसा ? शरीर तो संयोग है, उसका वियोग होता है, उससे मेरे जन्म-मरण का कोई सम्बन्ध नहीं है।

धर्मी जीव अपने चैतन्यस्वभाव को जन्म-मरण रहित असंग जानता और अनुभव करता है, फिर ज्ञानी को मरणरूप काले सर्पादि का भय कैसे होगा ? सिंह-बाघ आये तो आये वे किसका नाश करेंगे ? मैं तो अरूपी हूँ, मेरा भक्षण करनेवाला जगत में कोई नहीं है। मेरे शाश्वत वस्तु का खंड तीन काल में कभी भी नहीं हो सकता, फिर मुझे किसका भय ? श्रीमद्जी कहते है ह्न

एकाकी विचरते वनी-श्मशान में, बाघ-सिंह संयोग।
अडोल आसन, नहीं मन में क्षोभता, परम मित्रका जब पाया योग।।
अपूर्व अवसर ऐसा कब आयेगा ?

श्रीमद् राजचन्द्रजी गृहस्थाश्रम में थे, तब भावना भाते थे कि ह्न जिसने देह से भिन्न चैतन्य के ध्रुव स्वभाव को अन्तर में जान लिया है, अनुभव किया है, ऐसे धर्मी जीव को मृत्यु का भय नहीं होता। धर्मी के अभिप्राय में यह निश्चित् हो गया है कि मैं तो ज्ञान-दर्शनादि अनन्त चैतन्यप्राणों से जीने वाला तत्त्व हूँ।

मेरे चैतन्य के विकल्प में राग का प्रवेश नहीं है। मुझे कोई मार नहीं सकता; अत: मैं निडर हूँ ह्न ऐसा धर्मी जीव जानता है। धर्मी को मृत्यु, रोगादि का भय नहीं है। वात, पित्त,कफ आदि रोगों से धर्मी डरता नहीं है। वह यह जानता है कि मुझमें पुद्गल पर्याय सम्बन्धी समस्त व्याधियों का अभाव है।

स्वभाव का आश्रय लेकर अपने शुद्ध चैतन्यस्वभाव पर लक्ष्य करे तो शान्ति और आनन्द का वेदन होता है । परद्रव्य और परद्रव्यों का लक्ष्य आकुलतारूप, दु:खरूप है। वे आत्मा के लिये हानिकारक है। अरे ! जगत् के परसंयोगों में कैसे आनन्द आयेगा ? धर्मी तो आत्मा में आनन्द मानता है, जब बाह्यपदार्थो में आनन्द है ही नहीं, तो आनन्द कैसे आयेगा ?भले ही लाख-करोड रुपया हो, लेकिन वह सब धूल हैं। जब शरीर ही धूल है, तो धन की बात ही क्या ? वह तो नश्वर ही है, उसमें आनन्द कैसा ?

गर्मी में पित्तादि रोग होते है, उससे लोगों को बहुत दु:ख होता हैं, लेकिन प्रभो ! तेरे स्वरूप की शान्ति में पित्त का प्रकोप ही नहीं है। मैं तो शान्ति का सागर हूँ ह्न ऐसी दृष्टिवाला धर्मी, मुझे पित्त है ह्न ऐसा नहीं मानता। जड़ की कोई भी पर्याय धर्मी जीव अपनी नहीं मानता है, तो उसे दु:ख कैसे हो ? कॅन्सर, भगंदर, ब्रेन हेमरेज, टी.बी. आदि कोई भी रोग धर्मी जीव अपना नहीं मानता। रोग का सम्बन्ध तो शरीर के रजकणों के साथ है, आत्मा के साथ उसका कोई सम्बन्ध है ही नहीं।

भगवान आत्मा तीन काल में सर्व पदार्थों से रहित, पुण्य-पाप और रागादि से भिन्न है ह्न ऐसी जबतक दृष्टि नहीं होगी, तबतक जन्म-मरण का अभाव नहीं होगा।

सातवें नरके में नारकी जीव को जन्म से ही बड़े-बड़े रोग होते हैं, अत्यन्त पीड़ा होती है; किन्तु ऐसी पीड़ा के बीच में भी पूर्व में सुनी हुई बात कि ह्न हे जीव !

तू तो शान्ति का सागर है, परद्रव्य और परभावों से निराला है, याद आते ही जैसे बिजली तांबे के तार में सरसर उतर जाती है, उसीप्रकार नरक की महा भयंकर पीड़ा में भी स्वभाव की दृष्टि होते ही वीर्य अतंर में उतरता है और स्वभाव के आनन्द का अनुभव हो जाता है, किन्तु यहाँ अज्ञानी थोड़ी-सी पीड़ा में ही दु:ख महसूस करता है, उससे मुनिराज कहते हैं कि हे जीव ! सातवें नरक की भयंकर पीड़ा में भी जब आत्मानुभव हो सकता है, तो यहाँ तो वैसा दु:ख है नहीं; फिर भी तू आत्मा का अनुभव नहीं कर सकता ह्न ऐसा कैसे ?

धर्मी अपने आपको बालक, युवा, वृद्ध अवस्था से रहित भिन्न जानता है। बाल्यादि अवस्थाएँ नहीं हो ह्न ऐसा नहीं है; किन्तु यह सब पुद्गल की अवस्थाएँ हैं और मेरा चैतन्यतत्त्व इससे भिन्न है, फिर इन अवस्थाओं में जो पीड़ा है, उसका मुझे दु:ख कैसे ? शरीर की वृद्धावस्था से मुझे दु:ख नहीं होता; क्योंकि शरीर की वृद्धावस्था से मैं वृद्ध नहीं हूँ। मैं तो ज्ञान की वृद्धि से वृद्ध हूँ। आठ वर्ष के बालक को केवलज्ञान हो जाय, तो वह बालक भी ज्ञानवृद्ध है।

श्रीमद्जी ने एक पत्र में लिखा है ह्न आयु में नाना प्रकार होने से कोई कितना ही वृद्ध क्यों न हो, लेकिन जो ज्ञान विशेष से वृद्ध है, वही सच्चा वृद्ध है।

यही बात ज्ञानार्णव में आचार्य शुभचन्द्र कहते हैं कि जो राग से भिन्न अपने चैतन्य शक्ति को संभाल कर अपने स्वरूप को जानता है, वही वास्तविक वृद्ध है।

वृद्धावस्था में चल नहीं सकते, बैठ नहीं सकते। आखों से दिखाई नहीं देता, पीड़ा का भी पार नहीं है; फिर भी ज्ञानी कहते हैं कि मैं इन सब संयोगों से रहित असंग हूँ, तो बाल, वृद्धादिक अवस्थाओं में प्राप्त दु:ख मेरे कैसे ? यह तो जड़ की दशा है। मेरी चीज तो इससे भिन्न ज्ञानानन्द स्वभावी है। प्रतिकूलता मुझमें है ही नहीं। मैं तो शान्ति में झूलनेवाला आनन्दकन्द आत्मा हूँ।

प्रतिकूलता में ही आत्मा के आनन्द की कसौटी होती है, प्रतिकूलता में भी शान्ति रखे 'प्रतिकूलता मुझमें नहीं हैं, मैं तो मात्र शान्ति का सागर हूँ' ह्न ऐसे चिन्तनशील ज्ञानी जगत् से सदा जुदा ही रहते हैं।

बालक-वृद्धादि अवस्थाएँ तो पुद्गल की हैं, किन्तु इन अवस्थाओं में अपनापन मानना यह मिथ्यात्व है। पर की अवस्था पर में है, और मेरी अवस्था मुझमें है। ऐसे स्व-पर ज्ञायकपने का नाम ही धर्म है। यही पूज्यपादस्वामी का इष्टोपदेश है। **(क्रमश:)**

कारणशुद्ध और कार्य शुद्धजीव

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार की नौ वीं गाथा पर हुए आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्म-रसगर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है।

गाथा मूलत: इसप्रकार है -

जीवा पोग्गलकाया धम्माधम्मा य काल आयासं ।
तच्चत्था इदि भणिदा णाणागुणपज्जएहिं संजुत्ता ।।9।।

विविध गुण पर्यायों से युक्त जीव, पुद्गल, धर्म, अधर्म, आकाश और काल ह्न ये तत्त्वार्थ कहे हैं।

(गतांक से आगे ...)

यह जीव चेतन है, उसके गुण भी चेतन हैं। यहाँ गुण कहने पर अपूर्ण-पूर्ण अर्थ पर्यायों को ग्रहण करना है।

यह जीव अमूर्त है, उसके गुण भी अमूर्त हैं; जबकि शरीर तो जड़ और मूर्त है तथा वह अमूर्त आत्मा से भिन्न है। आत्मा की किसी पर्याय में स्पर्श-रस-गंध-वर्ण हैं ही नहीं। रूपादि गुण तो मूर्त हैं, जड़ हैं; जबकि आत्मा चेतन है, अमूर्त है। आत्मा की ज्ञानादि पर्याय अमूर्त है, इसलिये कहा है कि आत्मा के गुण अमूर्त और पर्याय भी वैसी ही है अर्थात् व्यंजन पर्याय भी अमूर्त ही है।

यह शुद्ध है, इसके गुण भी शुद्ध हैं। कार्यशुद्धजीव और कारणशुद्धजीव ह्न दोनों शुद्ध हैं और उनके गुण भी शुद्ध हैं। यहाँ गुण का तात्पर्य 'अर्थपर्याय' है। आत्मा की पर्याय के दो प्रकार हैं। प्रथम तो अर्थपर्याय अर्थात् ज्ञानादिगुणों की पर्याय और द्वितीय व्यंजनपर्याय अर्थात् प्रदेशत्वगुण की पर्याय ह्न उनमें से ज्ञानादि गुणों की पर्याय को यहाँ गुणरूप से कहा गया है।

कार्यशुद्ध जीव और कारण शुद्ध जीव की अर्थपर्यायें शुद्ध है, इसलिये उनके गुण शुद्ध हैं ह्न ऐसा कहा है। वह आत्मा शुद्ध है और उसके गुण (अर्थपर्याय) भी शुद्ध हैं। यह साधक जीव की बात है, साधक जीव के अभी अशुद्धता भी है, उसके

ज्ञानादि की पर्याय अभी विभावरूप है; इसलिये उसके गुण अशुद्ध भी हैं अर्थात् उसकी अर्थपर्यायें अशुद्ध हैं। अज्ञानी जीव भी अशुद्धजीव है और उसकी पर्यायें भी अशुद्ध हैं।

शुद्धजीव की पर्याय शुद्ध है और अशुद्ध जीव की पर्याय अशुद्ध है। केवलज्ञान और मतिज्ञानादि अर्थ पर्यायें तो पहले शुद्धगुण और अशुद्धगुण में आ गये; अत: अब यहाँ पर्यायें कहने में व्यंजनपर्याय समझना चाहिये।

जो त्रिकाल कारणशुद्धजीव है उसकी पर्याय भी त्रिकालशुद्ध है और जो कार्यशुद्ध जीव है उसकी व्यंजनपर्याय शुद्ध है, उसकी अर्थपर्याय का तो पहले ही शुद्धगुण में समावेश कर लिया गया है।

साधक जीव की व्यंजनपर्याय भी अशुद्ध है। अर्थपर्याय अशुद्ध है यह बात तो अशुद्धगुण में आ गयी अर्थात् यहाँ जो अशुद्धपर्याय कही गयी है उसमें अकेली व्यंजनपर्याय को ही लिया गया है।

शुद्धजीव की पर्यायें शुद्ध हैं, उनमें जो कारणशुद्धजीव है उसकी तो अर्थपर्याय और व्यंजनपर्याय दोनों त्रिकाल शुद्ध हैं ही। कार्यशुद्धजीव की भी व्यंजन पर्याय शुद्ध है। जहाँ अशुद्धजीव की अशुद्धपर्याय है ऐसा कहा है, वहाँ संसारदशा की विभाव व्यंजनपर्याय को लेना। कारणशुद्धजीव की त्रिकाल एकरूप रहनेवाली पर्याय तो शुद्ध ही है, उसको यहाँ नहीं लेना है तथा प्रदेशत्व गुण की पर्याय भी त्रिकाल शुद्ध है। संसारी जीव की आकृति में जो परनिमित्त से विभाव है, उसकी अपेक्षा वहाँ नहीं ली गई है; क्योंकि कारणशुद्धजीव की तो व्यंजन पर्याय भी त्रिकाल शुद्ध है।

कार्यशुद्धजीव के केवलज्ञानादि शुद्धगुण हैं ह्न ऐसा कहा, उसमें अर्थपर्याय आ गई। पश्चात् शुद्धपर्याय है ह्न ऐसा कहा, उसमें व्यंजन पर्याय समाविष्ट हो गई और जिनके मतिज्ञानादि गुण हैं, उन्हें अशुद्धगुण कहा तो उसमें अर्थपर्याय आ गई। और उनकी पर्याय अशुद्ध है ह्न ऐसा कहा उसमें व्यंजन पर्याय आ गई।

इसप्रकार विविध गुण-पर्याय बतलाकर जीव की पहिचान कराई गई है।

जीव के भेदों का ज्ञान करवाया; अभेद के आश्रयपूर्वक ऐसे भेदों से जीव को जानना व्यवहार सम्यग्दर्शन है और अभेद के आश्रयपूर्वक श्रद्धा करना निश्चय सम्यग्दर्शन है। जीव के उपर्युक्त भेदों को इसप्रकार समझा जा सकता है ह्न

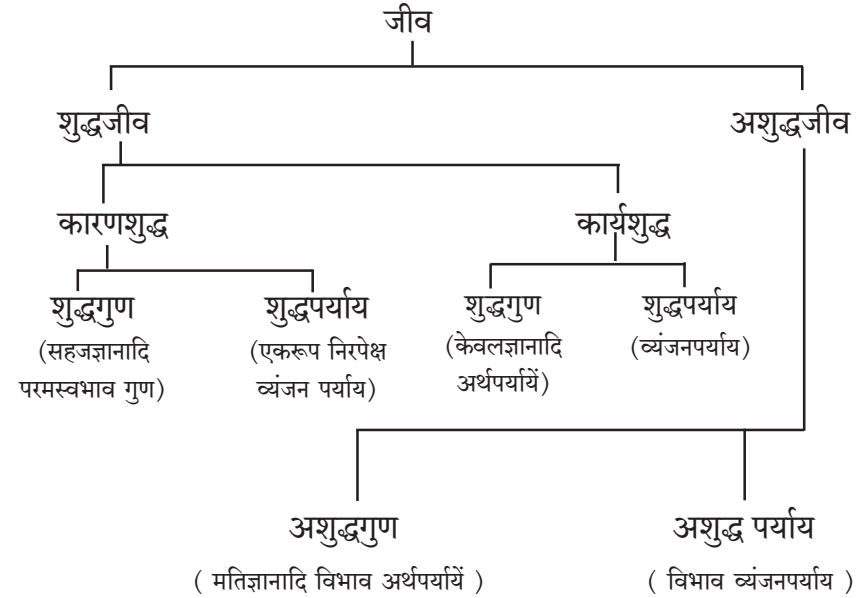

भगवान की वाणी में कहे गये छह द्रव्यों के वर्णन में जीव द्रव्य का वर्णन किया। उसमें छह प्रकार बताये।

अब, जो पूरण-गलन स्वभाव सहित है, वह पुद्गल है। यह पुद्गल श्वेतादि वर्णों का आधारभूत मूर्त अचेतन है, इसके गुण भी मूर्त, अचेतन है।

बिछुड़ना और मिलना पुद्गल का स्वभाव है ह्न वह स्वभाव जीव के कारण नहीं है। पुद्गल में जो श्वेत आदि रंग है वे वर्णगुण की पर्यायें हैं तथा वर्ण, रस, गंध आदि पुद्गल के गुण हैं। पुद्गल के आधार से ही श्वेत आदि रंग की अवस्था होती है ह्न अन्य कोई उसका कर्त्ता नहीं है। 'पुद्' अर्थात् मिलना और 'गल' अर्थात् बिछुड़ना ह्न ऐसा पुद्गल का स्वभाव है।

यहाँ रंग वगैरह की बात न करके उसकी श्वेतादि पर्यायों की बात की है ह्न इसप्रकार पर्याय को गुण कहने की शैली है। पुद्गल में वर्णादि गुणों की जो श्वेतादि पर्यायें होती हैं, उनका पुद्गल ही आधार है; अत: पुद्गल मूर्त है, अचेतन है, उसके गुण भी मूर्त व अचेतन हैं। उसकी पर्यायों की व्याख्या अजीव अधिकार में करेंगे। **(क्रमश:)**

शक्तियों का संग्रहालय : भगवान आत्मा

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम समयसार नामक ग्रन्थाधिराज पर परमपूज्य आचार्य अमृतचन्द्रदेव ने 'आत्मख्याति' नामक संस्कृत टीका लिखी है। उसके अन्त में परिशिष्ट के रूप में अनेकान्त का विस्तृत वर्णन करते हुये आत्मा की 47 शक्तियों का वर्णन किया है, साथ ही अनेक कलश भी लिखे हैं। उन पर गुरुदेवश्री कानजीस्वामी ने समय-समय पर अतिमहत्त्वपूर्ण प्रवचन किये हैं, जो पाठकों के लाभार्थ क्रमश: प्रस्तुत हैं।

(गतांक से आगे .....)

देखो ! यहाँ आचार्यदेव कहते हैं कि ह्न वस्तुस्वरूप को यथार्थ कहनेवाले इस समयसार की टीका शब्दों से बनी है, मुझसे नहीं। शब्दों के गूंथने की क्रिया शब्दों से ही हुई है, मुझसे नहीं। स्व-पर को कहने की शक्ति शब्दों की स्वयं की है। यदि कोई यह कहे कि शब्दों की रचना मैंने (आ. अमृतचंद्र ने) की है तो यह उसकी मूढ़ता है। अरे भगवान ! मैंने तो शब्दों का स्पर्श ही नहीं किया और न शब्दों ने मुझे स्पर्श किया। जगत के अनंत पदार्थ भिन्न-भिन्न हैं, एक-दूसरे को छूते ही नहीं हैं तो फिर वे एक-दूसरे के कर्त्ता कैसे हो सकते हैं?

कुछ लोग ऐसा कहते हैं कि वस्तुत: बात यह है कि समयसार की टीका तो आचार्यदेव ने ही की है; परन्तु अपनी लघुता बताने हेतु उन्होंने यह कलश लिखा है। जैसा कि प्राय: लोकव्यवहार में भी सज्जन लोग कहा करते हैं। उनसे आचार्य कहते हैं कि ह्न सचमुच मैंने कुछ नहीं किया है। अरे भाई ! शब्द तो जड़-पुद्गल की पर्याय है, आत्मा उसकी रचना कैसे कर सकता है? मैं तो गुप्त हूँ, ज्ञानस्वभाव में रहता हूँ, वाणी की पर्याय उसके परमाणुओं से हुई है।

व्यवहार में जो यह कहा जाता है कि समयसार के कर्त्ता आचार्य कुन्दकुन्द हैं और उसके टीकाकार आचार्य अमृतचन्द्र हैं, सो यह तो निमित्त का ज्ञान कराया गया है। वस्तुत: ग्रन्थ की रचना तो शब्दों के परमाणुओं से हुई है। ह्न ऐसे वस्तुस्वरूप का ज्ञान आचार्य अमृतचन्द्र ने कराया है। वस्तुत: तो एक द्रव्य दूसरे द्रव्य का काम करता ही नहीं है, यह अकाट्य सिद्धान्त है। इसे जानने और मानने

से ही सच्ची निरभिमानता आती है। माने तो ऐसा कि मैंने किया और कहे कि मैंने नहीं किया ह्न इसमें निरभिमान रहना कैसे संभव है? यदि कोई ऐसा कहेगा, वह तो छल ही की श्रेणी में गिना जायेगा।

अहा ! आचार्यदेव कहते हैं कि ह्न मैं जीव हूँ, शब्द अजीव हैं, मैं चैतन्य हूँ, शब्द जड़ हैं। मैं अमूर्तिक-अरूपी हूँ, शब्द मूर्तिक-रूपी हैं। मैं तो ज्ञानमात्र स्वभाव में गुप्त हूँ, मैं शब्दों में गया ही नहीं तो फिर मैं वाणी की रचना का कर्त्ता कैसे हो सकता हूँ? इस वाणी की रचना में मेरा कुछ भी कर्तव्य नहीं है। बस यह आचार्यदेव की निर्मानता है।

इसप्रकार श्री समयसार की (श्रीमद्भगवत्कुन्दकुन्दाचार्यदेवप्रणीत श्री समयसार परमागम की) श्रीमद् अमृतचन्द्राचार्यदेवविरचित आत्मख्याति नामक टीका समाप्त हुई। **(क्रमशः)**

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

01 से 07 सितम्बर	**मुम्बई**	**श्वेताम्बर पर्यूषण**
08 से 17 सितम्बर	**अहमदाबाद**	**दशलक्षण महापर्व**
06 से 15 अक्टूबर	**जयपुर**	**शिक्षण-शिविर**
16 से 23 अक्टूबर	**दिल्ली**	**समयसार गोष्ठी**
25 से 29 अक्टूबर	**देवलाली**	**विधान**
30 अक्टू. से 01 नवम्बर	**धरमपुर**	**दीपावली**
06 नवम्बर	**जयपुर**	**गिरनार रैली**
16 से 21 नवम्बर	**किशनगढ़**	**पंचकल्याणक**

जयपुर शिविर 6 अक्टूबर से....

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, जयपुर द्वारा प्रतिवर्ष दशहरे के अवसर पर लगनेवाले शिविर की तिथि पूर्व में 2 अक्टूबर से 11 अक्टूबर, 2005 तक निश्चित की गई थी; किन्तु अब यह शिविर **गुरुवार, दिनांक 6 अक्टूबर से शनिवार, 15 अक्टूबर 2005 तक** लगना निश्चित किया गया है।

अतः समस्त साधर्मी भाई-बहिन तिथि का ध्यान रखते हुये शिक्षण शिविर में अवश्य पधारें।

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : यदि एक-दूसरे की सेवा आदि परमार्थ का काम करें तो कुछ किया कहा जाये ? मात्र अपना-अपना ही करते रहें और दूसरे का कुछ भी न करें तो इसमें क्या ? अपना पेट तो श्वान भी भर लेता है।

उत्तर : पर का कुछ करना परमार्थ है ह्न यह बात ही खोटी है। लोगों को महान भ्रम घर कर गया है कि पर का काम करना, परमार्थ है। परमार्थ की ऐसी व्याख्या है ही नहीं। परमार्थ अर्थात् परमपदार्थ । परमपदार्थ या उत्कृष्ट पदार्थ ही परमार्थ है। और वह अपना आत्मा ही है; अतः वही सच्चा परमार्थ है अथवा परमपदार्थ अर्थात् मोक्ष, उसका उपाय करना अर्थात् आत्मा की सच्ची समझ करना, परमार्थ है। मैं पर की सेवा कर सकता हूँ ह्न ऐसा मानना परमार्थ नहीं है; बल्कि इस मान्यता में तो परमार्थ का हनन होता है, क्योंकि आत्मा पर का कार्य कर ही नहीं सकता।

प्रश्न : इस धर्म से तो समाज का कोई लाभ होनेवाला है नहीं ।

उत्तर : वस्तु का सत्य स्वरूप तो इसीप्रकार है। अरे ! समाज के जीवों को सत्य से लाभ होगा या असत्य से ? सभी को लाभ सत्य से ही होगा। जिस सत्य से एक को लाभ होगा, उसी से अनंत को भी लाभ होगा। संसार के जीव सत्यस्वरूप की नासमझी से ही दुखी हैं। यदि समझ लें तो दुख टले और सुख प्रकट हो। सत्य समझे बिना किसी को लाभ नहीं होता और सत्य से किसी को कभी हानि नहीं होती। जो भी हानि इस जीव को हुई है और होती है, वह अपने असत्यभाव (मिथ्यासमझ) से ही है। सत्य समझने में तो लाभ का ही धन्धा है, उसमें हानि तो है ही नहीं।

प्रश्न : यदि वाणी का कर्त्ता आत्मा नहीं है, तो 'मुनि को सत्य वचन बोलना चाहिये' ह्न ऐसा क्यों कहा जाता है ?

उत्तर : सम्यग्ज्ञानपूर्वक सत्य बोलने का भाव हो तब जो वाणी निकलती है, वह सत्य ही होती है ह्न ऐसा सुमेल बतलाने के लिये निमित्त से कहते हैं कि मुनि को सत्य बोलना चाहिये, उसमें ऐसा आशय है कि मुनिराज को आत्मस्वरूप में स्थिर रहकर वाणी की तरफ विकल्प ही नहीं होने देना चाहिए और यदि हो तो असत्य वचन की तरफ का अशुभराग तो होने ही नहीं देना चाहिये ह्न इसका आशय ऐसा कदापि नहीं है कि आत्मा जड़ वाणी का कर्त्ता है। ●

28 वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर सम्पन्न

जयपुर (राज.) : आध्यात्मिक सत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के सदुपदेश से निर्मित श्री टोडरमल स्मारक भवन में दि. 31 जुलाई से 9 अगस्त, 05 तक श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा आयोजित 28 वें बृहद् आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर का उद्घाटन रविवार, 31 जुलाई को प्रात: श्री विमलकुमारजी जैन नीरू कैमिकल्स दिल्ली के करकमलों से हुआ। समारोह के अध्यक्ष श्री प्रेमचन्दजी बजाज कोटा तथा मुख्य अतिथि पण्डित शिखरचन्दजी सर्राफ विदिशा थे।

इस अवसर पर डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने वर्तमान युग में आध्यात्मिक शिक्षण शिविरों की उपयोगिता पर प्रकाश डाला। सभा का संचालन ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद ने किया।

उद्घाटनसभा के पूर्व कार्यक्रम का शुभारंभ गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचन एवं पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल के उद्घाटन प्रवचन से हुआ; तत्पश्चात् श्री प्रदीपकुमारजी चौधरी परिवार, किशनगढ़ द्वारा झण्डारोहण एवं शिविर मण्डप का उद्घाटन श्री निहालचन्दजी जैन ओसवाल के करकमलों से हुआ।

शिविर के आमंत्रणकर्त्ता स्व. राजमलजी पाटनी की स्मृति में उनकी धर्मपत्नी श्रीमती रतनदेवी व सुपुत्र श्री अशोकजी पाटनी कोलकाता, दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल राजकोट एवं दिगम्बर जैन मुमुक्षु मण्डल जबलपुर थे।

शिविर के अवसर पर **श्री गणधर वलय विधान** के आयोजनकर्त्ता श्री बाबूलालजी सुखलालजी पंचोली परिवार थांदला, श्री मगनलालजी मामा आरोन-गुना, पण्डित सिद्धार्थकुमारजी दोशी रतलाम तथा श्री गम्भीरमलजी महेन्द्रकुमारजी धर्मेन्द्रकुमारजी जैन मानसरोवर, जयपुर थे। विधि-विधान के सम्पूर्ण कार्य पण्डित सुनीलकुमारजी धवल, भोपाल एवं सुरेशजी काले, राजुरा द्वारा कराये गये।

शिविर में मुख्य प्रवचन के रूप में प्रतिदिन प्रात: तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के प्रवचनसार परमागम पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। आपके अतिरिक्त डॉ. उत्तमचन्दजी जैन सिवनी एवं पण्डित शैलेषभाई शाह तलोद के सारगर्भित प्रवचनों का लाभ भी सभी को प्राप्त हुआ।

मुख्य प्रवचन के पूर्व प्रतिदिन प्रात: एवं रात्रि में पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित प्रदीपकुमारजी झांझरी उज्जैन, पण्डित पूनमचन्दजी छाबड़ा इन्दौर, पण्डित अनिलकुमारजी शास्त्री भिण्ड, पण्डित धनसिंहजी ज्ञायक पिड़ावा, ब्र.धन्यकुमारजी बेलोकर गजपंथा एवं पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री जयपुर के प्रवचन क्रमश: हुये। प्रतिदिन के कार्यक्रमों का प्रारंभ प्रात: 5 बजे गुरुदेवश्री के टेप प्रवचन से होता था।

शिक्षण कक्षायें ह्न शिविर में पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल ने **पर से कुछ भी सम्बन्ध नहीं (निमित्तोपादान)**, पण्डित प्रदीपकुमारजी झांझरी ने **परमार्थवचनिका**, ब्र.जतीशचन्दजी शास्त्री ने **छहढाला**, ब्र.यशपालजी जैन ने **गुणस्थान विवेचन**, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील ने **द्रव्यसंग्रह**, पण्डित नरेन्द्रकुमारजी जैन ने **क्रमबद्धपर्याय**, पण्डित संजीवकुमारजी गोधा ने **परमभावप्रकाशक नयचक्र** एवं पण्डित पीयूषकुमारजी शास्त्री द्वारा **प्रमाणज्ञान** विषय पर कक्षाएँ ली गई।

प्रात: 5.30 बजे प्रौढ़ कक्षायें ह्न ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री, पं. गुलाबचन्दजी बीना, पं. शिखरचन्दजी विदिशा, पं. शैलेषभाई शाह तलोद एवं पं. कोमलचन्दजी द्रोणगिरि द्वारा ली गई।

दोपहर की व्याख्यान माला में डॉ. श्रेयांसकुमारजी सिंघई जयपुर, डॉ. दीपकजी जैन जयपुर, पण्डित गुलाबचन्दजी बीना, ब्र. अभिनन्दनकुमारजी खनियांधाना, डॉ. राजेन्द्रकुमारजी बंसल अमलाई एवं पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री खैरागढ़ के विविध विषयों पर प्रवचन हुए।

गोष्ठी ह्न सोमवार, 8 अगस्त को श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, जयपुर के छात्रों द्वारा **आचार्य कुन्दकुन्द और उनका समयसार** विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया; जिसकी अध्यक्षता पण्डित धनसिंहजी जैन पिड़ावा ने की तथा विशिष्ट अतिथि श्री महीपालजी जैन बांसवाड़ा थे। संचालन संभव जैन ने किया। शिविर के मध्य सिद्धायतन-द्रोणगिरि से आये छात्रों ने भी कार्यक्रम प्रस्तुत किये; जिसमें कक्षा 6 से 8 तक के बालकों का सराहनीय प्रदर्शन रहा।

श्री कुन्दकुन्द कहान दिग. जैन तीर्थसुरक्षा ट्रस्ट की सलाहकार समिति का अधिवेशन ह्न रविवार, 7 अगस्त 2005 को दोपहर में ट्रस्ट की सलाहकार समिति का अधिवेशन सम्पन्न हुआ; जिसकी अध्यक्षता ब्र. धन्यकुमारजी बेलोकर, गजपंथा ने की। सभा का उद्घाटन श्री रमेशचन्दजी कोदरलालजी दोशी सुधासणा ने किया। मुख्य अतिथि के रूप में श्री डालचन्दजी जैन सागर (पूर्व सांसद) एवं श्री अशोककुमारजी बड़जात्या इन्दौर के अतिरिक्त अन्य अनेक महानुभाव मंचासीन थे।

सभा में सलाहकार मण्डल के प्रतिनिधियों के रूप में सर्वश्री डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल, डॉ. राजेन्द्रकुमारजी बंसल अमलाई, जिनेन्द्रकुमारजी जैन इन्दौर, विश्वलोचनजी जैनी नागपुर, मधुकरजी जैन जलगाँव, सुरेशजी जैन टीकमगढ़, डॉ. मानमलजी जैन कोटा, हीरालालजी काला भावनगर, मगनलालजी गोयल टीकमगढ़, अशोकजी जैन जबलपुर, जयकुमारजी जैन शिवपुरी, सुबोधजी सिंघई सिवनी ने अपने सुझाव प्रस्तुत किये।

ट्रस्ट के महामंत्री श्री बसन्तभाई दोशी द्वारा ट्रस्ट का परिचय दिया गया। अन्त में महाविद्यालय के उपप्राचार्य पण्डित शांतिकुमारजी पाटील द्वारा श्री टोडरमल दिग. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय की गतिविधियों एवं प्रगति की जानकारी देते हुए आभार प्रदर्शन किया गया। मंगलाचरण कु. परिणति पाटील, जयपुर तथा संचालन ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री, सनावद ने किया।

विमोचन ह्न शिविर के अवसर पर प्रवचनसार का सार, क्षत्रचूड़ामणि, समयसार का सार, प्रवचनसार अनुशीलन भाग-1, डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल : व्यक्तित्व और कर्तृत्व, नींव का पत्थर, जोगसारु, मोक्षमार्गप्रकाशक (अंग्रेजी), वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग - 1 व 2, छहढ़ाला (मूल एवं सचित्र) आदि 16 पुस्तकों का विमोचन किया गया।

शिविर में महाविद्यालय के 165 विद्यार्थियों के सिवाय देश से पधारे लगभग 1150 साधर्मियों ने धर्म लाभ लिया। इस अवसर पर नकद एवं उधार कुल 1 लाख 75 हजार रुपयों का सत्साहित्य तथा 22 हजार रुपयों के ऑडियो कैसिट्स एवं सी.डी. घर-घर पहुँचे। वीतराग-विज्ञान (हिन्दी, मराठी) एवं जैनपथप्रदर्शक के अनेक सदस्य बनें। ●

दशलक्षण महापर्व के पावन प्रसंग पर कौन-कहाँ

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी दशलक्षण महापर्व में समाज के आमंत्रण पर विद्वान भेजने की व्यवस्था की गई है। यद्यपि पर्यूषण पर्व 08 सितम्बर से प्रारम्भ होगें; अभी पर्व प्रारंभ होने में काफी समय शेष है; फिर भी दिनांक 10 अगस्त 2005 तक हमारे पास 407 स्थानों से आमंत्रण प्राप्त हो चुके हैं तथा अनेक स्थानों से आमंत्रण प्राप्त हो रहे हैं। दिनांक 08 अगस्त तक लिये गये निर्णयानुसार अभी सिर्फ 311 स्थानों पर ही विद्वान निश्चित हो सके हैं; शेष स्थानों पर विद्वान निश्चित करना बाकी है। ध्यान रहे, इनमें 172 स्थानों पर तो श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, जयपुर के स्नातक विद्वान ही जा रहे हैं। अभी तक तैयार सूची यहाँ प्रकाशित की जा रही है ।

विशिष्ट विद्वान ह्न 1.**कोटा :** बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल' कोटा, 2.**अहमदाबाद (नवरंगपुरा) :** डॉ.हुकमचंदजी भारिल्ल जयपुर, 3.**जयपुर (टोडरमल स्मारक) :** पं. रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर, 4.**इन्दौर (माणक चौक):** पं.पूनमचंदजी छाबडा इन्दौर, 5.**हुबली :** ब्र.यशपालजी जैन जयपुर, 6.**मुम्बई (बोरिवली) :** डॉ.उत्तमचंदजी जैन सिवनी, 7.**विदिशा (किला अन्दर) :** पं. विमलप्रकाशजी झांझरी उज्जैन, 8.**कोलकाता (पद्दोपुकुर) :** ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद, 9.**उदयपुर (सेक्टर 11) :** ब्र. अभिनंदनजी शास्त्री खनियाँधाना, 10.**सागर (गौरमूर्ति) :** ब्र. सुमतप्रकाशजी जैन खनियाँधाना, 11.**सिलवानी :** ब्र.संवेगी केशरीचन्दजी 'धवल' छिन्दवाड़ा, 12. **पोन्नूरधाम :** ब्र. हेमचंदजी 'हेम'देवलाली, 13. **मुम्बई (भायन्दर वेस्ट) :** पं. कपूरचंदजी 'कौशल' भोपाल 14.**जयपुर :** पं. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर, 15.**मुम्बई (सीमन्धर जिनालय) :** पं. प्रदीपकुमारजी झांझरी उज्जैन, 16. **नागपुर (इतवारी) :** पं. राजेंद्रकुमारजी जबलपुर, 17. **कोटा (रामपुरा) :** पं. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, 18.**अलीगढ (शहर) :** पं. अशोककुमारजी लुहाडिया,अलीगढ़।

विदेश ह्न 1.**लंदन :** पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, 2.**वाशिंग्टन (अमेरिका)** : पण्डित दिनेशभाई शहा मुम्बई, 3.**वाशिंग्टन (अमेरिका)** : विदुषी उज्ज्वलाजी शहा मुम्बई।

मध्यप्रदेश प्रान्त ह्न 1.**सागर (मकरोनिया) :** पं. बाबूभाई मेहता फतेपुर, 2.**भोपाल (कोहेफिजा) :** विदुषी कल्पनाजी जैन सागर, 3.**भिण्ड (देवनगर) :** पं. कांतिकुमारजी पाटनी इन्दौर, 4.**उज्जैन :** पं.जयकुमारजी बारां, 5.**गुना (मुमुक्षु मण्डल) :** विदुषी पुष्पाबेन खण्डवा, 6. **इन्दौर (न्यू पलासिया) :** पं. सुबोधकुमारजी सिंघई सिवनी, 7.**अंबाह (बडा मंदिर) :** पं. देवेन्द्रजी सिंगोडी, 8.**बेगमगंज :** पं.कैलाशचन्दजी इन्दौर, 9.**बैडियाँ :** पं.बाबूलालजी बांझल गुना, 10.**टीकमगढ :** पं. सतीशचन्दजी जैन महिदपुर, 11.**छिन्दवाडा :** पं. धनसिंहजी पीड़ावा, 12.**गुना (शांति. मन्दिर) :** पं.गुलाबचन्दजी भोपाल, 13.**भोपाल (चौक):** पं. सुरेन्द्रजी पंकज छिन्दवाड़ा, 14.**करेली :** पं. कमलेशकुमारजी मौ, 15.**भिण्ड (परमागम) :** पं.शिखरचन्दजी विदिशा, 16.**इन्दौर (साधनानगर) :** पं. अनिलकुमारजी शास्त्री भिण्ड, 17.**इन्दौर (शक्कर बाजार) :** पं. गुलाबचन्दजी बीना, 18.**सिवनी :** पं.सौरभजी जैन फिरोजाबाद, 19.**दलपतपुर :** पं. निखलेशजी शास्त्री दलपतपुर, 20.**मंदसौर (गौतमनगर) :** पं. हुकमचन्दजी राघौगढ़, 21.**बीना :** पं. सुदीपजी जैन बीना, 22.**इन्दौर (देवास रोड) :** पं. सिद्धार्थजी दोशी रतलाम, 23.**इन्दौर (गांधीनगर) :** पं.मधुकरजी जलगाँव, 24.**रतलाम (स्टेशन रोड) :** पं. भंवरलालजी जैन कोटा, 25.**रतलाम (तोपखाना) :** पं.मनोजजी जैन करेली, 26.**पथरिया :** पं. भागचंदजी जैन पथरिया, 27.**बावनगजा सिद्धक्षेत्र :** डॉ. दीपकजी जैन जयपुर, 28.**ग्वालियर (मु.मण्डल) :** विदुषी राजकुमारीजी जयपुर, 29.**जबलपुर :** पं. मनीषकुमारजी शास्त्री रहली, 30.**द्रोणगिरि :** पं.राजमलजी भोपाल, 31.**दुर्ग :** पं. अश्विनजी नानावटी, 32.**आरोन :** पं.मांगीलालजी कोलारस, 33.**अशोकनगर :** पं. योगेशजी शास्त्री अलीगंज, 34.**खनियांधाना :** पं. कोमलचन्दजी द्रोणगिरि, 35.**खुरई :** पं. अरहंतप्रकाशजी झांझरी उज्जैन, 36.**शाहगढ़ :** पं. सरदारमलजी बेरसिया, 37.**महिदपुर :** पं. दिनेशजी कासलीवाल उज्जैन, 38. **गौरझामर :** पं सतीशचन्दजी पिपरई, 39.**पथरिया (पार्श्वनाथ मंदिर) :** पं. कुंदनमलजी पथरिया, 40.**मौ :** पं. जगदिशसिंहजी पंवार उज्जैन, 41.**ऊन पावागिरि :** पं. राजुभाई कानपुर, 42.**रीवा :** पं.मनीषजी शास्त्री बरेली, 43.**रांझी (जबलपुर) :** पं.ऋषभकुमारजी ललितपुर, 44.**बडनगर :** पं. अनिलजी पाटोदी बड़नगर, 45.**केसली :** पं.निर्मलजी सागर, 46.**ग्वालियर (फालका बाजार) :** पं. महेशचंदजी जैन ग्वालियर, 47.**गोरमी :** पं. बाबूलालजी पल्लिवाल गुना, 48.**शहडोल :** पं.नन्हेलालजी सागर, 49.**बंडा बेलई :** पं. अरूणकुमारजी लालोनी अशोकनगर, 50.**गढ़ाकोटा :** पं.राजेन्द्रजी जैन पिपरई, 51.**मन्दसौर (नई आबादी) :** पं. रूपचन्दजी जैन बण्डा, 52.**गोहद :** पं.नरेन्द्रजी जैन जबलपुर, 53.**जबेरा :** विदुषी ब्र. सुधाबहनजी छिन्दवाड़ा, 54.**लुहारदा :** पं. आकेशजी छिन्दवाड़ा, 55.**विजयपुर :** पं. अशोकजी मांगूलकर राधौगढ़, 56.**बीना :** पं. मोतीलालजी जैन बीना, 57.**निसई (तारणतरण) :** पं. मनोजजी खडैरी, 58.**सनावद :** पं. विक्रान्तजी पाटनी झालरापाटन, 59.**शुजालपुर मण्डि :** पं. सुदीपजी बरगी, 60. **सागर (तारण तरण) :** पं. अंकुरजी शास्त्री देहगाँव, 61.**जावरा :** पं.हीरालालजी गंगवाल, 62.**इन्दौर :** पं. गौरवजी जैन चन्देरी 63.**कालापीपल :** पं. महेन्द्रजी सेठी, 64. **टीकमगढ़ :** पं. अरुणकुमारजी जैन, 65. **अशोकनगर :** पं. अमोलकचन्दजी जैन, 66. **उज्जैन :** पं. बेलजीभाई शाह, 67.**कर्रापुर :** पं. धनप्रसादजी जैन, 68.**बण्डा :** पं. कपूरचन्दजी भाईजी, 69.**खनियांधाना :** पं. ताराचन्दजी जैन, 70.**बदरवास :** पं. अभयकुमारजी जैन, 71.**घोडाडूंगरी :** पं. सुरेशचन्दजी जैन, 72. **भोपाल :** पं. अनुरागकुमारजी बडकुल, 73.**भोपाल :** पं.राजमलजी पवैया, 74.**ग्वालियर :** पं. अजितजी जैन, 75.**भोपाल :** पं. अभिषेकजी सिलवानी, 76.**निसई (तारण-तरण) :** पं.कपूरचन्दजी समैय्या, 77.**कटनी :** पं.संतोषजी जैन शास्त्री, 78.**ग्यारसपुर :** पं. राजेशजी शास्त्री, 79.**लोहारदा :** पं. छगनलालजी जैन, 80.**सिवनी :** पं. कपूरचन्दजी भारिल्ल, 81.**ग्वालियर :** पं. धनेन्द्रजी सिंघल, 82.**ग्वालियर :** पं. सुनीलजी जैन, 83.**खैरागढ़ :** पं. दुलीचन्दजी जैन, 84.**सिवनी :** पं. शिखरचन्दजी जैन, 85.**बीना :** पं. राजेशजी जैन, 86.**अशोकनगर :** पं.विमलजी जैन, 87.**अमरपाटन :** पं.राजेन्द्रजी जैन, 88.**पथरिया :** पं. नेमीचन्दजी जैन, 89.**भोपाल (चौक) :** पं.महेशजी गुढ़ा, 90.**छतरपुर :** पं. नेमीचन्दजी जैन।

महाराष्ट्र प्रान्त ह्न 1.**नातेपुते :** ब्र. धन्यकुमारजी बेलोकर गजपंथा, 2.**मुम्बई (मलाड) :** पं.रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर, 3.**मुम्बई (दादर) :** पं.शैलेषभाई शाह तलोद, 4.**मुम्बई**

(घाटकोपर) : पं. मेहूलजी मेहता कोलकाता, 5.**मुम्बई (भूलेश्वर) :** पं. रमेशचन्दजी जैन जयपुर, 6.**मुम्बई (दादर–मारवाडी) :** पं. संजयकुमारजी जैन अलीगढ़, 7.**पुणे (स्वा. भवन) :** पं.राकेशजी शास्त्री अलीगढ़, 8.**औरंगाबाद :** विदुषी आशाजी जैन मलकापुर, 9.**हिंगोली :** पं. सुरेन्द्रकुमारजी उज्जैन, 10.**मुम्बई :** पं.अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल, 11.**कारंजा (लाड) :** पं.सुरेशजी सिंघई भोपाल, 12.**देवलगाँवराजा :** पं. देवीलालजी आंबेकर चिखली, 13.**मलकापुर :** पं. महेन्द्रजी भिण्ड, 14.**पुसद :** पं. जीवराजजी जैन नासिक, 15.**वाशिम (जवाहर कॉलोनी) :** पं.सुरेशजी टीकमगढ़, 16.**गजपंथ (सिद्धक्षेत्र) :** पं. केशवरावजी डबरे नागपुर, 17.**वसमतनगर (महावीर मन्दिर):** पं. नेमीचन्दजी महाजन, 18.**मुम्बई (भायन्दर पूर्व) :** पं.भरतेशजी पाटील पुणे, 19.**कोल्हापुर :** पं. विक्रान्तजी शाह सोलापुर, 20.**वसगडे :** पं.चन्दनमलजी शाह नातेपुते, 21.**मुम्बई (दहिसर) :** पं.मनोजजी जबलपुर, 22.**पंढरपुर :** पं.फूलचन्दजी मुक्किरवार हिंगोली, 23.**पंढरपुर :** विदुषी मंजुषाजी मुक्किरवार हिंगोली, 24.**चिखली** : पं.दिलीपजी महाजन मालेगाँव, 25. **शिरडशहापुर :** पं.प्रशांतकुमारजी काले, 26.**मुम्बई (वसई) :** विदुषी चेतनाबेन देवलाली, 27.**कुम्भोज बाहुबली :** पं.नेमीनाथजी बालिकाई, 28.**मुम्बई (डोंबिवली) :** पं. ज्ञायकजी जैन राजकोट, 29.**देवलाली :** डॉ. मानमलजी जैन कोटा, 30.**मुम्बई (अणुशक्तिनगर) :** पं.सुमेरचंदजी बेलोकर, 31.**मुम्बई (दहीसर) :** विदुषी शुद्धात्मप्रभाजी टडैया, 32.**मुम्बई :** विदुषी स्वानुभूति जैन 33.**जिंतुर :** विजयजी राऊत रीठद, 34.**मुम्बई(एवरशाइन):** पं.विपिनजी शास्त्री, 35.**मुम्बई :** पं.अनिलजी शास्त्री, 36.**मुम्बई :** पं. परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, 37.**पानकन्हेरगाँव :** पं. अशोकजी मिरकुटे, 38.**सोलापुर (कासार मन्दिर) :** पं.विजयजी कालेगोरे, 39.**सोलापुर (बुवणे मन्दिर) :** पं.रवीन्द्रजी काले कारंजा, 40.**परभणी :** पं.मनोहरजी मारवडकर नागपुर, 41.**औरंगाबाद :** पं. कल्याणमलजी गंगवाल, 42.**नागपुर :** पं.मधुकरजी गडेकर, 43.**एलोरा:** पं. गुलाबचन्दजी बोरालकर, 44.**एलोरा :** पं.प्रदीपजी माद्रप, 45. **जिंतूर :** पं.नरेन्द्रजी वानरे, 46.**वर्धा :** पं.राजेन्द्रजी भागवतकर, 47.**रामटेक :** पं.गेंदालालजी जैन, 48.**सेलू :** पं. अशोकजी वानरे, 49. **हिंगोली :** पं. पद्माकरजी दोडल 50.**हिंगोली :** पं. जयकुमारजी दोडल 51.**सांगली :** पं.महावीरजी पाटील, 52. **लोणावला :** पं.गोकुलचन्दजी जैन, 53.**देवलगांवराजा :** पं. विजयकुमारजी आह्वाने, 54.**देवलगांवराजा :** पं.उमाकांतजी बंड, 55.**जयसिंहपुर :** पं.पार्श्वनाथजी कुगे, 56.**कन्नड :** पं.सचिनजी पाटनी, 57.**हिंगोली :** पं.अमोलजी संघई, 58. **कारंजा (लाड):** पं. आलोकजी शास्त्री, 59. **नवागड़ :** पं. संतोषजी उखलकर कारंजा, 60. **मुंबई :** पं. अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल, 61. **अकोला :** विदुषी स्नेहलताजी उदापुरकर, 62. **नातेपुते :** पं. शीतलचंदजी दोशी, 63. **कचनेर :** पं. संजयजी राऊत, 64. **औरंगाबाद :** पं. विशालजी कान्हेड, 65. **सेनगांव :** पं. किरणजी उखलकर, 66. **पाथरडी :** पं. विवेकजी सातपुते, डोणगाँव ।

गुजरात प्रान्त ह्न 1.**हिम्मतनगर :** पं. राजकुमारजी शास्त्री बाँसवाड़ा, 2.**राजकोट :** पं. सुशीलकुमारजी राघौगढ़, 3.**अहमदाबाद (नवरंगपुरा) :** पं. पीयूषकुमारजी शास्त्री जयपुर, 4.**अहमदाबाद (बहेरामपुरा) :** पं.सुकुमालजी झांझरी उज्जैन, 5.**अहमदाबाद (बापूनगर) :** पं. सुकुमालजी जैन कोलारस, 6.**अहमदाबाद (मेघाणीनगर) :** विदुषी ज्ञानधाराजी झांझरी उज्जैन, 7.**अहमदाबाद(मेघाणीनगर) :** विदुषी पुष्पलताजी झांझरी उज्जैन, 8.**अहमदाबाद (न्यू जैन मिलन) :** पं.मांगीलालजी कुरावली, 9.**अहमदाबाद (नारायणनगर) :** पं. सुरेशजी जैन गुना,

10.**अहमदाबाद (मणीनगर) :** पं. महेंद्रजी सागर, 11.**तलोद :** पं.अनुभवप्रकाशजी शास्त्री कानपुर, 12.**दाहोद :** पं. विनोदकुमारजी जैन गुना, 13.**रखियाल :** पं. अश्विनभाई जैन मुंबई,14.**वापी :** डॉ. महावीरप्रसादजी जैन टोकर, 15. **बड़ोदरा :** पं. सौरभजी शास्त्री इन्दौर, 16. **मोरबी :** पं. समकितजी शास्त्री सिलवानी, 17. **अहमदाबाद (नवरंगपुरा) :** कु. अनुप्रेक्षाजी जैन मुंबई, 18. **अहमदाबाद (नवरंगपुरा) :** पं. अनेकांतजी भारिल्ल मुंबई, 19. **राजकोट :** पं. बृजलालजी अजमेरा, 20. **मोरबी :** पं.इंदुभाई सिंघई, 21. **अहमदाबाद :** पं. नवीनजी जैन।

उत्तरप्रदेश प्रान्त ह्न 1.**आगरा (नमकमंडी) :** पं. चंदुभाई फतेपुर, 2.**ललितपुर :** पं. श्रेणिकजी जबलपुर, 3. **खतौली :** पं. लालारामजी साहू, 4. **मुजफ्फरनगर :** पं. अजितजी जैन मड़ावरा, 5. **मेरठ (तीरगरान) :** पं. प्रकाशदादा मैनपुरी, 6. **कानपुर (सर्राफा) :** पं. विरागजी शास्त्री जबलपुर, 7. **फिरोजाबाद :** पं. महेशचंदजी कानपुर, 8. **बड़ौत :** पं. नंदकिशोरजी गोयल विदिशा, 9.**मंगलायतन (अलीगढ़) :** पं. देवेंद्रकुमारजी बिजौलिया, 10. **जसवंतनगर :** पं. कमलकुमारजी मलैया जबेरा, 11.**करहल :** पं. गोकुलचंदजी सरोज ललितपुर, 12. **धामपुर :** पं. रमेशचंदजी जैन करहल, 13. **रामपुर मणिहारन :** पं. वीरेन्द्रकुमारजी वीर फिरोजाबाद, 14. **झाँसी:** पं. मुरारीलालजी नरवर, 15. **सरहानपुर** : पं. प्रवीणकुमारजी शास्त्री जयपुर, 16. **मैनपुरी :** पं. नेमीचंदजी जैन ग्वालियर, 17.**शेरकोट :** पं. प्रदीपजी धामपुर, 18. **रूड़की :** पं. अजितजी जैन फिरोजाबाद, 19. **सासनी :** पं. सुधीरजी जबलपुर, 20. **मड़ावरा** : पं. मनोजजी मुजफ्फरनगर, 21. **कुरावली :** पं.विकासजी जैन मौ, 22. **कानपुर (किदवईनगर) :** पं. विपिनजी शास्त्री फिरोजाबाद, 23. **शिकोहाबाद** : पं. रवीजी ललितपुर, 24. **सुलतानपुर :** पं. प्रशांतकुमारजी मोहरे सोलापुर, 25.**बानपुर :** पं. देवेंद्रजी अकाझिरी, 26.**ललितपुर :** पं.भानुकुमारजी शास्त्री, 27.**खतौली :** पं. सोनूजी शास्त्री, 28.**सुलतानपुर :** पं. देवचन्दजी जैन, 29. **खतौली :** पं.कल्पेंद्रजी जैन, 30.**शामली :** पं. सलेकचन्दजी जैन।

राजस्थान प्रान्त ह्न 1.**उदयपुर (मुमुक्षु मंडल) :** पं. वीरेन्द्रकुमारजी जैन आगरा, 2. **उदयपुर (केशवनगर) :** पं. कमलचंदजी पिड़ावा, 3.**उदयपुर (गायरियावास) :** पं. प्रकाशदादा झांझरी उज्जैन, 4.**अजमेर :** पं. कस्तूरचंदजी विदिशावाले भोपाल, 6.**पिडावा :** पं. संजयकुमारजी इंजी. खनियांधाना, 7.**अलवर :** डॉ. श्रेयांसकुमारजी सिंघई जयपुर, 8.**भीण्डर :** पं. तेजकुमारजी गंगवाल इंदौर, 9.**किशनगढ :** पं.नागेशजी जैन पिड़ावा, 10.**उदयपुर (नेमिनाथ) :** पं.शीतलजी पांडे उज्जैन, 11.**भीलवाडा :** पं.पदमकुमारजी अजमेरा रतलाम, 12.**बिजौलियाँ :** पं.भोगीलालजी भदावत उदयपुर, 13.**उदयपुर (सन्मति भवन) :** पं.अरविंदजी शास्त्री सुजानगढ़, 14.**चित्तौडगढ़ :** पं.विमलचंदजी लाखेरी, 15.**प्रतापगढ़ :** पं. सुनीलजी जैन, 16.**पीसांगन :** पं. धरमचंदजी जैन जयथल, 17.**निम्बाहेडा :** पं. सुनीलकुमारजी नाके, 18.**उदयपुर (प्रभातनगर) :** पं.योगेशजी शास्त्री बरा, 19.**डबोक :** पं.गणतंत्रजी शास्त्री बाँसवाड़ा, 20.**अलीगढ़ :** पं. मीठालालजी जैन कलिंजरा, 21.**कोटा (इंद्रविहार) :** पं.सचिनजी शास्त्री बरेली, 22.**अजमेर :** पं.सुनीलजी धवल भोपाल, 23.**लूणदा :** पं.चिन्मयजी शास्त्री पिड़ावा, 24.**डूंगरपुर (पत्रकार कालोनी) :** पं.लखमीचंदजी जैन, 25.**तालेड़ा :** पं. मोहनलालजी केशवरायपाटन, 26.**बेरी :** पं.माणिकचंदजी जैन बेरी, 27.**बाँसवाड़ा:** पं. निलयजी शास्त्री टीकमगढ़, 28.**नौगाँव :** पं.धर्मेशजी शास्त्री रैयाना, 29. **अलवर :** प्रेमचंदजी जैन, 30.**किशनगढ :** पं.पवनजी शास्त्री, 31.**विजयनगर :** पं.शकुनराजजी

लोढ़ा, 32.**प्रतापगढ़ :** पं.सज्जनलालजी सांवरिया, 33.**रूपाहेडीकलां :** पं.पद्माकरजी मंजूले, 34.**बस्सी :** पं. कृष्णचन्दजी शास्त्री भिण्ड, 35.**बांरा :** पं.संजीवजी शास्त्री, 36.**शाहबाद :** पं. भगवतीप्रसादजी शास्त्री, 37.**टामटिया :** पं. प्रमोदजी जैन, 38. **भैसरोडगढ़ :** पं. संजयजी शास्त्री 39.**नौगामा :** पं.शीतलजी शास्त्री, 40.**कुचामनसिटी :** पं.जयप्रकाशजी गाँधी, 41.**भीण्डर :** पं.छोगामलजी जैन, 42.**भरतपुर :** पं.अरूणजी बण्ड, 43.**अलवर :** पं.अजीतजी शास्त्री 44.**महावीरजी :** पं.नेमचन्दजी शास्त्री, 45.**उदयपुर (मु. मण्डल) :** पं.जिनेन्द्रकुमारजी शास्त्री, 46.**डूँगरपुर :** पं. सुदीपजी शास्त्री, घाटोल।

अन्य प्रान्त ह्न 1.**बैंगलोर :** पं. शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, 2.**कोलकाता (नया मन्दिर) :** पं. अभयकुमारजी शास्त्री खैरागढ़, 3.**भागलपुर :** पं.संजयकुमारजी सेठी जयपुर, 4.**सिकन्दराबाद :** पं.रतनचन्दजी शास्त्री कोटा, 5.**कोयम्बटूर :** पं.अभिनवजी शास्त्री मैनपुरी, 6.**हिसार :** पं.कैलाशचन्दजी मोमासर, 7.**रानीपुर :** पं. गजेन्द्रजी शास्त्री बड़ामलहरा, 8.**कोलकाता (पद्दोपुकुर) :** पं. अनीलजी धवल कानपुर, 9.**एर्नाकुलम :** पं.आशीषजी शास्त्री टीकमगढ़, 10.**हजारीबाग :** पं. वीरचन्दजी, 11.**भागलपुर :** पं. जागेशजी शास्त्री जबेरा, 12.**कनकगिरि :** पं. नाभिराजनजी शास्त्री, 13.**श्रवणबेलगोला :** पं. शान्तिसागरजी शास्त्री,14.**चम्पापुर :** पं. मनीषजी शास्त्री खडैरी।

दिल्ली प्रान्त ह्न 1.ब्र. कैलाशचन्दजी अचल ललितपुर, 2. पं. पंकजजी शास्त्री बण्डा, 3. पं.कस्तुरचन्दजी बजाज भोपाल, 4. पं. अविरलजी शास्त्री विदिशा, 5. पं. पुरनचन्दजी जैन सोनागिरि, 6. पं. सत्येन्द्रमोहनजी जैन पडपडगंज, 7. पं. नितिनजी जैन नांगलराया, 8. पं.अमितजी जैन फूँटेरा, 9. पं.सुनीलजी बेलोकर, 10. पं.सुरेन्द्रजी शास्त्री शाहगढ़, 11. पं.सुशीलजी शास्त्री फूँटेरा, 12. पं.मनोजजी शास्त्री डडूका, 13. पं. राजेन्द्रजी बंसल अमलाई, 14. पं. राजीवजी जैन गुना, 15. पं. दीपकजी धवल भोपाल, 16. पं. प्रद्युम्नजी जैन मुजफ्फरनगर, 17. पं. ऋषभजी जैन उस्मानपुर 18. पं. संदीपजी जैन बांसवाड़ा, 19. पं. संजीवजी जैन दिल्ली, 20. पं. श्रुतेशजी सातपुते जयपुर, 21. पं. सुरेशजी काले राजुरा, 22. पं. निकलंकजी शास्त्री कोटा, 23. पं. प्रशान्तजी मौ।

नोट ह्न जयपुर एवं शेष स्थानों की सूची जैनपथप्रदर्शक (सितम्बर-प्रथम) के अंक में प्रकाशित की जायेगी।

पं. दिनेशभाई एवं डॉ. उज्ज्वलाजी शाह का विदेश कार्यक्रम

विगत वर्ष के समान इस वर्ष भी पण्डित दिनेशभाई शाह एवं डॉ. उज्ज्वलाजी शाह, मुम्बई दशलक्षण महापर्व के अवसर पर धर्म प्रचारार्थ दिनांक 31 अगस्त से 26 अक्टूबर, 2005 तक अमेरिका जा रहे हैं। दशलक्षण महापर्व में वे वाशिंग्टन रहेंगे। उनका वहाँ का कार्यक्रम इसप्रकार है ह्न दिनांक 31 अगस्त से 7 सितम्बर तक **फिनिक्स**, दिनांक 7 से 19 सितम्बर तक **वाशिंग्टन**, दिनांक 19 से 27 सितम्बर तक **मियामी**, दिनांक 27 सितम्बर से 3 अक्टूबर तक **डलास**, दिनांक 3 से 11 अक्टूबर तक **अटलांटा**, दिनांक 11 से 18 अक्टूबर तक **शिकागो** एवं दिनांक 18 से 26 अक्टूबर तक **राले**।